गणराज्यीय मुद्राएँ

विन्सेन्ट स्मिथ द्वारा औदुम्बर, कुणिन्द, मालवा आदि जातियों को जनजाति का नाम दिया गया और अधिकांश विद्वान इसी नाम का अनुपालन करते रहे हैं। इन्हीं में से यौधेय तथा मालवों को गण और अग्र, अग्रात्य, राजन्य, त्रिगर्त आदि को जनपद कहा गया है। ये दोनों ही राजसत्तात्मक शासन प्रणाली का निर्वाह न करके गणतन्त्रात्मक शासन प्रणाली का निर्वहन कर रहे थे जिसमें समस्त नीति-निर्धारण और प्रशासन का उत्तरदायित्व जनप्रजाति या गणराज्य के प्रतिनिधि या मुखिया को हस्तगत रहता था। अवदानशतक दो प्रकार के राज्यों का उल्लेख करता है— राज्यतन्त्र और गणतन्त्र। समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति से भी नौ गणराज्यों का उल्लेख प्राप्त होता है। अधिकतर गणराज्यों के सिक्के गणों के नाम से प्रचलित किए गये थे, हालांकि कुछ पर राजा या महाराजा उपाधिधारक राजा का नाम भी प्राप्त होता है, जैसे औदुम्बर सिक्कों में शिवदास, रुद्रदास और धरघोष के सिक्के। इनमें से कुछ गणराज्यों के सिक्कों पर ब्राह्मी और खरोष्ठी दोनों लिपियों में लेख प्राप्त हुए हैं। शनैः शनैः खरोष्ठी का स्थान भी ब्राह्मी लिपि ने ले लिया। औदुम्बर, कुणिन्द आदि ने ताम्र सिक्कों के साथ ही यूनानी सिक्कों के समान और चिह्न युक्त रजत सिक्के भी प्रचलित किए। औदुम्बर, कुणिन्द, वैमकी और हिन्द-यवन सिक्कों की कांगड़ा के निकट ज्वालामुखी से प्राप्ति इस तथ्य की पुष्टि करती है।

प्राचीन साहित्यिक साक्ष्यों में औदुम्बर, कुणिन्द और कुछ अन्य जनजातियों व गणराज्यों का उल्लेख वाहीक, हूण आदि विदेशी जातियों के साथ किया गया है। कुलूत को भी विदेशी ही माना गया है। शिबोई (शिबि) यूनानियों के वंशज थे। अग्र, औदुम्बर और यौधेय को क्रमशः अग्रवाल वैश्य, गुजरात के ब्राह्मण और जोहिय राजपूतों का पूर्वज माना जाता है। विभिन्न गणराज्यों और उनके सिक्कों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

अग्र

अग्र का उल्लेख पाणिनि (लगभग ५वीं शताब्दी ई०पू०) की अष्टध्यायी से प्राप्त होता है। महाभारत में इनका उल्लेख अग्रेय के रूप में मद्र, रोहीतक और मालव के साथ किया गया है। महामायूरी (तृतीय-चतुर्थ ईस्वी) में इन्हें अग्रोहक

कहा गया है। कुछ विद्वानों का विचार है कि सिकन्दर के विरुद्ध पंजाब में युद्ध करने वाले अगलस्सोई अथवा ऑक्सीद्रकाई अग्र ही थे। इनका मूल स्थान पंजाब के अग्रोहा, जिला हिस्सार को माना जाता है यहीं से अधिकांश सिक्के एकत्र किए गए हैं। अग्र सिक्के, एक को छोड़कर जो चाँदी का है, ताँबे से बने हैं। ये वर्गाकार अथवा आयताकार हैं। गोल आकार वाले सिक्के अत्यन्त सीमित संख्या में हैं। इन सिक्कों की तौल १३ ग्रेन से ११९ ग्रेन है। इनकी तिथि द्वितीय शताब्दी ई०पू० से प्रथम शताब्दी ई०पू० के मध्य निर्धारित की जाती है। इन सिक्कों पर प्राप्त चिह्नों में अग्रभाग पर वेदिका में वृक्ष का अंकन तथा पृष्ठ भाग पर वृषभ, सिंह, पर्वत पर सिंह, वृषभ के शरीर और उल्लू के सिर वाला काल्पनिक पशु, वृषभ का शरीर और दो सिर वाला पशु और कमल लिए लक्ष्मी में से किसी एक का अंकन किया गया है। इन पर एक ओर अथवा दोनों ओर ब्राह्मी लिपि में लेख हैं। ये लेख वर्गों में बाँटे गए हैं। प्रथम वर्ग के सिक्कों पर 'अगोदक अगाचजनपदस' (अग्र का अथवा अग्रोदक में प्रचलित अग्र का) लेख अंकित है। द्वितीय वर्ग के सिक्कों पर 'अगाचमिच पदामिश (यन)' (अग्र के मित्रगण का) अंकित है। बर्नेट तथा दासगुप्त का मत है कि अग्र किसी संघ के सदस्य रहे होंगे। कालान्तर में यौधेयों के सिक्कों से भी इस प्रकार के किसी संघ की उपस्थिति का आभास मिलता है। अंत में ये शकों अथवा यौधेयों में सम्मिलित कर लिए गए।

आर्जुनायन

पाणिनि की अष्टाध्यायी, समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति, वृहत्संहिता, चान्द्र व्याकरण (लगभग छठी शताब्दी ईस्वी), और अभिधान चिंतामणि (ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी ईस्वी) से आर्जुनायनों के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। जिस प्रकार यौधेयों को पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर से सम्बन्धित माना जाता है, उसी प्रकार आर्जुनायन का सम्बन्ध अर्जुन से है। इनका क्षेत्र पूर्वी पंजाब से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मध्य माना जाता है। चाँदी के एक सिक्के को छोड़कर शेष सभी सिक्के ताँबे के हैं और वृत्ताकार हैं। इन सिक्कों को एलन ने दो वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग के सिक्कों के अग्रभाग पर यूप और वेदिका में वृक्ष के बीच मनुष्य आकृति (संभवतः लक्ष्मी) है। इसी ओर ब्राह्मी में लेख आजनायना (आर्जुनायनानाम्) अंकित है। पृष्ठभाग पर खड़े वृषभ का अंकन है। द्वितीय वर्ग के सिक्कों को भी दो प्रकारों में बाँटा गया है। प्रथम प्रकार के सिक्कों के अग्रभाग पर वेदिका में यज्ञवेदी की ओर मुख किए कूबड़दार बैल खड़ा है। साथ में लेख आर्जुनायनजयरः अंकित है। पृष्ठभाग पर वेदिका में वृक्ष और सूंढ़ ऊपर उठाए हाथी है। द्वितीय प्रकार के सिक्कों का अग्रभाग और पृष्ठभाग प्रथम प्रकार के समान ही है किन्तु ब्राह्मी लेख 'अर्जुनायानाम् जय' अंकित है। इनमें वेदिका में वृक्ष का अंकन नहीं है।

धातु, आकार, तौल, लेख, चिह्नों और तिथि के आधार पर इन सिक्कों की तुलना राजन्य सिक्कों से की जाती है। वृषभ को शूलगव बलि (वृषभ बलि), हाथी को बुद्ध अथवा इन्द्र से सम्बन्धित माना जा सकता है।

इन सिक्कों का प्रारम्भ प्रथम शताब्दी ई०पू० में हुआ था और कनिष्क की सत्ता में समाहित होने के पूर्व तक ये प्रचलन में रहे। किन्तु विद्वानों का विचार है कि हुविष्क के शासन के अन्त में कुषाणों के पतन साथ ही ये सिक्के प्रचलन में आए और समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति के आधार पर कहा जा सकता है कि उनकी स्वायत्तता समुद्रगुप्त के प्रभुत्व में विलीन हो गयी थी।

अश्वक

अश्वक सिक्के तक्षशिला के समीपवर्ती क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं। महाभारत में अश्वकों का उल्लेख अश्मकों के साथ मिलता है जो उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के निवासी थे। सम्भवतः इन्होंने सिकन्दर से कड़ा प्रतिरोध किया था। इन पर वृत्ताकार, पर्वत पर अर्द्धचन्द्र, मानव, टराइन और 'वटाश्वक' लेख प्राप्त होता है। इन सिक्कों का भार १३५-१४६ ग्रेन है। जो कार्षापण की तौल के पर्याप्त निकट है। इन सिक्कों की तिथि तृतीय, द्वितीय शताब्दी ई०पू० मानी जाती है।

औदुम्बर

औदुम्बर शब्द उदुम्बर से बना है जिसका तात्पर्य उन लोगों से है जो उदुम्बर (अंजीर) वृक्ष से सम्बन्धित थे अथवा उस स्थल से सम्बन्धित थे, जहाँ अंजीर की पैदावार बहुतायत से होती थी। यह विशेषता गुरुदासपुर जिले की भी है जहाँ से औदुम्बर सिक्के प्राप्त होते हैं। पाणिनि की अष्टाध्यायी (लगभग पांचवी शताब्दी ई०पू०) से इनका स्थान जलन्धर के पास निश्चित किया जा सकता है। महाभारत, वृहत्संहिता और सांची से प्राप्त अभिलेख से भी औदुम्बरों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। चान्द्र व्याकरण (पांचवी शताब्दी ईस्वी) में उन्हें शाल्वों के एक अंग के रूप में उल्लिखित किया गया है।

औदुम्बर सिक्के गुरुदासपुर जिले के पठानकोट, कांगड़ा जिले के इरिप्पल और पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश के कुछ स्थलों से प्राप्त हुए हैं।

औदुम्बर सिक्कों से प्राप्त अंकन के आधार पर उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया गया है।

प्रथम वर्ग— प्रथम वर्ग के सिक्कों में शिवदास, रुद्रदास, धरघोष और महादेव के ताँबे से बने सिक्के हैं। इन सभी सिक्कों पर खरोष्ठी और ब्राह्मी दोनों लिपियों में लेख अंकित हैं।

शिवदास के सिक्कों के अग्रभाग पर वेदिका में वृक्ष, हस्ति का अग्रभाग, नीचे रेखा और खरोष्ठी में लेख 'महादेवस रञ सिवदसस' अंकित है। पृष्ठभाग पर मंदिर, त्रिशूल व कुठार और ब्राह्मी लिपि में लेख 'औदुम्बरिस सिवदसस' अंकित है।

रुद्रदास के सिक्कों पर खरोष्ठी लेख 'महादेवस रज रुद्रदसस' और ब्राह्मी लेख 'औदुम्बरिस' अंकित है। शेष चिह्न समान हैं। धरघोष के सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि में 'महदेव रज धरघोषस' और ब्राह्मी लिपि में 'औदुबरिस' तथा महादेव के सिक्कों पर 'महदेव औदुबरिस' और 'महादेवस औदुबरिस' लेख अंकित है। शेष चिह्न सभी सिक्कों पर समान हैं।

द्वितीय वर्ग—द्वितीय वर्ग के सिक्के चाँदी से बने हैं और वृत्ताकार हैं। इस प्रकार के सिक्के महादेव और धरघोष के प्राप्त होते हैं। महादेव के सिक्कों पर अग्रभाग में कूबड़दार वृषभ, कमल पुष्प और खरोष्ठी लेख 'भगवत महदेवस रजरज' और पृष्ठभाग पर हाथी, त्रिशूल और ब्राह्मी में लेख 'भगवत महदेवस रजरज' प्राप्त होता है। महादेव के ही दूसरे प्रकार के सिक्कों पर वृषभ, नन्दिपद, खरोष्ठी में लेख 'भगवत महदेवस रजरज' और पृष्ठभाग में पिछले सिक्के के समान चिह्न व लेख प्राप्त होते हैं। महादेव के तीसरे प्रकार के सिक्कों पर अग्रभाग पर तीन पत्ती की आकृति और पृष्ठभाग पर ब्राह्मी लिपि में 'भगवत महदेवस' लेख और त्रिशूल व कुठार लिए खड़ी मानव आकृति का अंकन है। धरघोष के सिक्कों पर अग्रभाग में विश्वामित्र की सम्मुख आकृति, दाहिना हाथ उठा हुआ, बाईं भुजा पर चर्म छाला और खरोष्ठी में लेख 'विश्वमित्र महदेवस रज धरघोषस' और पृष्ठभाग पर त्रिशूल कुठार, वेदिका में वृक्ष और ब्राह्मी में लेख 'महदेवस रज धरघोषस औदुबरिस' अंकित है। इन सिक्कों की तिथि द्वितीय शताब्दी ई०पू० से प्रथम शताब्दी ईस्वी के मध्य निर्धारित की गई है।

काड

द्वितीय शताब्दी ई०पू० के कुछ सिक्कों पर 'काडस' लेख प्राप्त होता है। ये सिक्के बहुत अच्छी तरह नहीं बनाए गए हैं। इन सिक्कों के प्राप्ति स्थल के आधार पर इन्हें पंजाब प्रान्त का निवासी माना गया है। काड को विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से विश्लेषित किया हैं। इन सिक्कों पर नदी, सूर्य, दण्ड लिए मानव, हाथी, टराइन, घट-पल्लव, स्वस्तिक, वेदिका में वृक्ष, कलश, पुष्पयुक्त कलश आदि चिह्न प्रमुख हैं। इन पर ब्राह्मी लिपि में 'काडस' लेख अंकित है। दण्ड लिए आकृति की तुलना कार्तिकेय से की जाती है।

क्षुद्रक

श्री गंगासागर जिला, राजस्थान के पंडुसर नामक स्थल से प्राप्त दो सिक्के क्षुद्रकों के माने गए हैं। ये गोल सिक्के २०.३ और १०.२ ग्रेन भार के हैं। इनके अग्रभाग पर वेदिका में वृक्ष और ब्राह्मी लिपि में लेख खदकान (क्षुद्रकानाम्) अंकित है। यद्यपि दूसरे सिक्के पर पूर्ण लेख नहीं पढ़ा जा सकता है। इन सिक्कों की तिथि द्वितीय शताब्दी ई०पू० निर्धारित की जाती है।

कुलूत

कुलूत शासकों के बारह सिक्के तक्षशिला के उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। इनमें से ग्यारह सिक्के वर्गाकार हैं। बारहवाँ सिक्का गोल आकार का है। इन सिक्कों की तिथि प्रथम शताब्दी से द्वितीय शताब्दी ईस्वी के मध्य निर्धारित की जाती है। अष्टाध्यायी, रामायण, महाभारत, वृहत्संहिता, कादम्बरी, युआन च्वांग आदि के यात्रा-विवरण में कुलूतों का विभिन्न प्रकार से उल्लेख मिलता है। इन सिक्कों के अग्रभाग पर बिन्दुओं से घिरा चक्र, जयध्वज अथवा नन्दिपद, पर्वत, स्वस्तिक का अंकन तथा ब्राह्मी में लेख 'वीर यशस्य राज्ञ कुलूतस्य' अथवा 'राज्ञ कुलूतस्य विजय मित्रस्य' तथा खरोष्ठी लिपि में '(रा)ज्ञ कुलूतस्य वीरय (शस्य)' लेख अंकित है। पृष्ठभाग पर वेदिका में नन्दिपद, वृक्ष के चारों ओर चार नन्दिपद, कमल, ब्राह्मी अक्षर 'म' प्राप्त होता है। ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों में लेख और चिह्नों के आधार पर इन सिक्कों का सम्बन्ध औदुम्बर और कुणिन्दों से स्थापित किया जाता है जिनकी तिथि द्वितीय-प्रथम शताब्दी ई०पू० है। किन्तु इन सिक्कों पर प्राप्त लेखों में संस्कृत का प्रयोग उनकी तिथि और पीछे ले जाता है। महाभारत और मृच्छकटिक में कुलूतों को म्लेच्छ या विदेशी कहा गया है। सम्भवतः ये विदेशी थे किन्तु बाद में स्थानीय लोगों से पूर्णतया घुलमिल गए।

कुणिन्द

कुणिन्द शासकों के सिक्के गोल हैं और चाँदी और ताँबे के बने हैं। इन्हें सहारनपुर, गढ़वाल, ज्वालामुखी, कर्नाल, रोपर, टप्पामेवा आदि स्थलों से प्राप्त किया गया है। कुणिन्द नाम के कुलिन्द, कौणिन्द, कौलिन्द आदि विभिन्न रूप प्राप्त होते हैं। महाभारत, रामायण, वृहत्संहिता, टॉल्मी के विवरण आदि से कुणिन्दों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। इनके सिक्कों में से कुछ के अग्रभाग पर मृग, शृंगों के बीच स्वस्तिक, पशु के ऊपर छत्र से घिरा स्तूप (?), दाहिने हाथ में कमल लिए लक्ष्मी, कुछ अन्य चिह्न और ब्राह्मी में लेख 'राज्ञः कुणिन्दस (स्य) अमोघभूतिस (या स्य)' महाराजस (या स्य) प्राप्त होता है। पृष्ठ भाग पर स्वस्तिक, नन्दिपद पर कोण वाला पर्वत, वेदिका में वृक्ष, जयध्वज, नदी या सर्प और खरोष्ठी में लेख 'रज कुणिन्दस अमोघभूतिस महरजस' अंकित है।

इस प्रकार के कुछ अन्य सिक्के लेखरहित हैं। शेष सिक्कों के अग्रभाग पर दाहिने हाथ में त्रिशूल और कुठार लिए खड़े शिव की आकृति है, जिनका बायाँ हाथ कमर पर है। बाईं भुजा से व्याघ्र-चर्म लटक रहा है। ब्राह्मी लिपि में लेख 'भगवत चत्रेश्वर महात्मनः' तथा पृष्ठभाग पर मृग, श्रीवत्स, वेदिका में वृक्ष, नन्दिपदयुक्त पर्वत, वर्ग, जयध्वज और नदी का अंकन प्राप्त होता है। कुछ अन्य सिक्कों पर शिवदत्त, शिवपालित, हरिदत्त आदि शासकों के नाम प्राप्त होते हैं। इन सिक्कों पर

वृषभ (मृग), वेदिका में वृक्ष व कुछ अन्य चिह्न प्राप्त हुए हैं। इन सिक्कों की कुमाऊँ से प्राप्ति के आधार पर रैप्सन ने इन्हें अल्मोड़ा के सिक्के कहा है।

मालव

मालवों का उल्लेख पाणिनि की अष्टाध्यायी में नहीं प्राप्त होता किन्तु चौथी शताब्दी ई०पू० की रचनाओं में उनका नाम मिलता है। रायचौधरी ने उनका क्षेत्र रावी नदी के दाहिने किनारे पर और स्मिथ ने झेलम और चेनाब नदियों के मध्यस्थ प्रदेश में इनका निवास स्थान निर्धारित किया है। आज भी पंजाब में मालवा नामक स्थान है। मारकण्डेय व विष्णुपुराण में भी उनका उल्लेख मिलता है। युआन-च्वांग के विवरण, नासिक, नंदसायूप और समुद्रगुप्त के अभिलेखों में भी इनका नामोल्लेख मिलता है।

मालवों के आरम्भिक सिक्के वृत्ताकार और ताम्र निर्मित हैं और मुख्यरूप से राजस्थान से प्राप्त हुए हैं। कुछ वर्गाकार व आयताकार मुद्राएं भी प्राप्त हुई हैं। इन सिक्कों पर चिह्नों में सूर्य, वृक्ष, वेदिका में वृक्ष, नन्दिपद, रेखाएँ, सिंह, वृषभ, कलश, मानव शिर, पंख फैलाए मयूर, उज्जैन-चिह्न, हस्ति व पशु की आकृति प्रमुख है। इन सिक्कों पर कभी अग्रभाग तो कभी पृष्ठभाग और कभी दोनों ओर लेख अंकित है। जैसे—'जय', 'मालव', 'माल (वानाम्)', 'मालव जय', 'मालवण जय', 'मालवगण.....', 'मालवगणस्य जय', 'यम', 'मजप', 'मपोजय', 'मपो' आदि। इनके अतिरिक्त कुछ सिक्कों पर 'मपयस', 'मगजस', 'मगज', 'मगोजव', 'गजर', 'मसप', 'मपक', 'पछ', 'मगछ', 'गजव', 'जामक', 'जमपय', 'पथ', 'मरज' अंकित है और पृष्ठ भाग पर वृषभ या सिंह का चिह्न है। प्रचलन क्षेत्र, प्रकार, धातु तथा चिह्न आदि के आधार पर इन सिक्कों को मालव सिक्के माना जाता है।

कनिंघम ने इन सिक्कों की तिथि २५० ई०पू० से २५० ईस्वी और रैप्सन ने १५० ई०पू० से पाँचवी शताबदी ईस्वी के मध्य निर्धारित की है। एलन ने इनकी तिथि द्वितीय शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी ईस्वी के मध्य निश्चित की है। अभारतीय नाम वाले शासकों के विषय में कुछ विद्वानों का विचार है कि वे मूलरूप से विदेशी थे। यद्यपि स्थानीय मालव शासकों और उनके समकालीन विदेशी शासकों के मध्य सम्बन्ध निर्धारित करना कठिन है।

राजन्य

राजन्य सिक्के गोलाकार हैं और उनका निर्माण ताँबे अथवा पीतल से किया गया था। वे या तो ढालकर या पीटकर बनाए जाते थे। इन सिक्कों को मथुरा और पंजाब के होशियारपुर जिले से एकत्र किया गया है। इन सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि में लेख प्राप्त होते हैं। विभिन्न विद्वानों द्वारा इनकी तिथि द्वितीय से प्रथम शताब्दी ई०पू० के मध्य निर्धारित की जाती है। इन सिक्कों को दो भागों में विभाजित किया गया है।

१. **प्रथम वर्ग**—इस वर्ग के सिक्कों के अग्रभाग पर हाथ में कमल (?) लिए खड़ी मुद्रा में लक्ष्मी का अंकन है, जिनका दाहिना हाथ उठा हुआ है। इसी ओर खरोष्ठी लिपि में लेख 'रजञ जनपदस' अंकित है। पृष्ठभाग में किरणों वाले वृत्त में वृषभ बना है। इसी प्रकार के कुछ सिक्कों पर पृष्ठभाग में वृषभ के सिर के ऊपर अर्द्धचन्द्र और पीठ पर वज्र के समान चिह्न अंकित है।

२. **द्वितीय वर्ग**—द्वितीय वर्ग की कुछ मुद्राओं पर प्रथम वर्ग के समान ही चिह्न अंकित हैं, केवल लेख ब्राह्मी लिपि में है। दूसरे प्रकार के सिक्कों पर अन्य विशेषताएँ समान हैं केवल अग्रभाग पर छत्र के नीचे खड़ी मानवाकृति का अंकन है। इन सिक्कों का भार १५ से १२१ ग्रेन के बीच है। एलन का विचार है कि खरोष्ठी लिपि युक्त सिक्के द्वितीय शताब्दी ई०पू० के और ब्राह्मी लिपि वाले सिक्के प्रथम शताब्दी ई०पू० के हैं।

शिबि

ऋग्वेद, ऐतरेय ब्राह्मण, महाभारत, पतंजलि के महाभाष्य, डायोडोटस, स्ट्रैबो और कर्टियस के विवरण आदि से हमें शिबियों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। शिबियों ने पंजाब से राजस्थान के नगरीय क्षेत्र की ओर प्रवजन किया था जहाँ से उनके सिक्के प्राप्त होते हैं। इन सिक्कों की लिपि द्वितीय शताब्दी ई०पू० निर्धारित की जाती है। समस्त शिबि मुद्राएँ गोलाकार हैं और ताँबे से निर्मित हैं। उनका भार ६३-८४ ग्रेन के बीच है। इन सिक्कों पर वृषभ, पर्वत, वेदिका में वृक्ष, स्वस्तिक, नन्दिपद, ब्राह्मी अक्षर 'ट', वृक्ष, नदी, यूप के सामने पशु, टराइन आदि का अंकन किया गया है। इन सभी सिक्कों के अग्रभाग पर ब्राह्मी लेख अंकित है, जिन्हें 'शिबिजनपदस', 'राज्ञो', 'झमिकाय शिबिजनपदस' पढ़ा गया है। दो अन्य सिक्कों को, जिनके अग्रभाग में खड़ा वृषभ और ब्राह्मी में लेख 'जेष्ठपुर' अंकित है और पृष्ठभाग सादा है, अल्तेकर शिबियों की मुद्रा अभिहित करते है और जेष्ठपुर = ज्येष्ठपुर की तुलना वेसन्तर जातक में उल्लिखित शिबियों की राजधानी 'जेतुत्तर' से करते हैं।

त्रिगर्त

एक चौकोर सिक्के के अग्रभाग में अन्य चिह्नों के साथ खरोष्ठी में और पृष्ठभाग पर वृक्ष की शाखाओं और नन्दिपद के साथ ब्राह्मी लिपि में लेख प्राप्त होता है। यह लेख 'त्रकत जनपदस' (त्रिगर्त जनपदस्य) पढ़ा जाता है। पाणिनि की अष्टाध्यायी, महाभारत, वृहत्संहिता आदि में इनका उल्लेख प्राप्त होता है। 'त्रिगर्त' से तात्पर्य तीन गढ़ों से है जिनकी तुलना रावी, व्यास और सतलुज की घाटियों से की जाती है, जहाँ इनका राज्य था। थपल्याल के अनुसार, "Trigarta means, 'three pits', and it has been suggested that the tribe occupied three valleys of Ravi, Beas and Sutlej."

उद्देहिक

द्वितीय शताब्दी ई०पू० के प्रतीत होने वाले ताँबे के कुछ सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में 'उदेहकि' अंकित है। जिनका शासन क्षेत्र उत्तरी भारत में अलवर, भरतपुर, गंगासागर, रैढ़ आदि स्थलों तक फैला हुआ था। इनके सिक्कों पर प्राप्त चिह्नों में उज्जैन चिह्न, वर्ग में दो मछलियाँ, वेदिका में वृक्ष, वृषभ, हस्ति, श्रीवत्स, जयध्वज, नदी में मछली, सूर्य, षटकोणीय पर्वत, त्रिशूल तथा कुछ अन्य चिह्न उल्लेखनीय हैं। इन सिक्कों के अग्रभाग पर प्राप्त लेख इस प्रकार हैं— 'उदेहकि', 'सुयमि (तस)', 'सुदवप' और 'ध्रुवमितस', जो ब्राह्मी लिपि में अंकित हैं। इन सिक्कों का भार ३५-८० ग्रेन है और इन्हें ठप्पों की सहायता से बनाया गया है। इन सिक्कों का प्रचलन प्रथम शताब्दी ई०पू० तक होता रहा।

वेमकि

वेमकि के केवल दो सिक्के क्रमशः ज्वालामुखी और होशियारपुर से प्राप्त हुए हैं, जो चाँदी और ताँबे के है। रजत सिक्का वृत्ताकार है और इसके अग्रभाग पर वृषभ, कमल और खरोष्ठी में लेख-'रज वेमकिस रुद्रवरमस विजयत' अंकित है। पृष्ठभाग पर हस्ति, त्रिशूल के साथ कुठार चिह्न और ब्राह्मी में लेख 'राज्ञो वेमकिस रुद्रवर्मस विजयक' पढ़ा जा सकता है।

यहाँ से प्राप्त ताँबे का सिक्का वर्गाकार है। अग्रभाग पर हस्ति, नन्दिपद और ब्राह्मी में लेख 'वेमकजनपदस' अंकित है। पृष्ठभाग पर वृषभ, नन्दिपद और स्वस्तिक का अंकन किया गया है।

वृष्णि

अष्टाध्यायी, महाभारत, पुराण, अर्थशास्त्र आदि से वृष्णियों के संघ की जानकारी प्राप्त होती है। हरिवंश पुराण के अनुसार कृष्ण के नेतृत्व में वृष्णियों ने मथुरा छोड़ कर द्वारका में निवास बनाया था। वृष्णियों का केवल एक वृत्ताकार रजत सिक्का प्राप्त होता है, जिसका भार ३२ ग्रेन है। इसके अग्रभाग पर वेदिका में नन्दिपद, आधा सिंह-आधा हस्ति, पशु और ब्राह्मी लिपि में लेख 'वृष्णि राजसागणस्य त्रतरस्य' अंकित है। पृष्ठभाग पर चक्र का पहिया और खरोष्ठी में लेख 'वृष्ठिराजन्न' का अंकन किया गया है। इस चक्र को श्रीकृष्ण का सुदर्शनचक्र माना जाता है।

यौधेय

यौधेय गणराज्य उत्तर-पश्चिमी भारत में स्थित था। समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति में उल्लिखित गणराज्यों की सूची में 'यौधेय' भी एक गणराज्य है, जिसकी गणना जूनागढ़ अभिलेख में वीर क्षत्रियों के अन्तर्गत की गई है। इस अभिलेख की तिथि के आधार पर इस गणराज्य की तिथि १५० ईस्वी के लगभग मानी जाती है।

वृहत्संहिता में इन्हें उत्तरी क्षेत्र का निवासी कहा गया है। पुराणों विशेषकर हरिवंशपुराण से इनका उल्लेख प्राप्त होता है। सोमदेवसूरि के 'यशस्तिलक' ग्रन्थ में इनके नामोल्लेख के आधार पर इनकी उपस्थिति दसवीं शताब्दी ईस्वी में भी सुनिश्चित होती है। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि यौधेयों ने आर्जुनायन और कुणिन्द गणराज्यों के साथ मिल कर एक संघ की स्थापना की थी। इस मत की पुष्टि उनके सिक्कों पर प्राप्त 'द्वि' अथवा 'त्रि' लेख से होती है। अल्तेकर महोदय का विचार है कि 'द्वि' अथवा 'त्रि' दो या तीन गणराज्यों के संघ का द्योतक है। जिन्होंने कुषाणों के विरुद्ध एक संघ बना कर युद्ध किया था। पाणिनि की अष्टाध्यायी में इनका उल्लेख एक आयुधजीवी संघ के रूप में हुआ है। इसी प्रकार का उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य में भी प्राप्त होता है। महाभारत में युधिष्ठिर के पुत्र का नाम यौधेय उल्लिखित है। मौर्यों के शासनकाल में ये उनके अधीन थे और कालान्तर में उन्होंने अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की थी। तृतीय शताब्दी ईस्वी के विजयगढ़ अभिलेख में उन्हें 'महाराज' या 'महासेनापति' कहा गया है, जो चुना हुआ राजा होता था। भरतपुर के एक अभिलेख से भी इस उपाधि की पुष्टि होती है।

राज्य-विस्तार—अनेक विद्वानों ने विभिन्न स्थलों से प्राप्त यौधेय सिक्कों के आधार पर उनके राज्य विस्तार की सीमा निर्धारित करने का प्रयास किया है। उनके सिक्के मुख्य रूप से पंजाब प्रान्त व उसके निकटवर्ती क्षेत्रों से प्राप्त होते हैं। इन क्षेत्रों में देहरादून, गढ़वाल, कांगड़ा, लुधियाना, दिल्ली और रोहतक आदि प्रमुख हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है। कि यौधेवों का सत्ता क्षेत्र पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान के क्षेत्रों तक विस्तृत था।

यौधेय सिक्कों का प्रकार—आकार व धातु के आधार पर यौधेय सिक्कों का विभाजन तीन प्रकार से किया जा सकता है—

प्रथम प्रकार के सिक्के आकार में छोटे हैं और तांबे से निर्मित हैं। इनकी तुलना औदुम्बर और कुणिन्द आदि गणराज्यों के सिक्कों से की जा सकती है।

द्वितीय प्रकार के सिक्के आकार में काफी बड़े हैं। ये सिक्के भी तांबे द्वारा निर्मित हैं। इनकी तुलना कुषाण सिक्कों से की जा सकती है।

तृतीय प्रकार के सिक्के चांदी से बने हैं। इनकी संख्या सीमित है।

काल-विभाजन के आधार पर यौधेय सिक्कों को निम्नलिखित प्रकारों में बाँटा जा सकता है।

(१) नन्दी तथा हाथी प्रकार के सिक्के
(२) कार्तिकेय अंकित एवं 'ब्राह्मण्यदेव' लेख युक्त सिक्के
(३) कार्तिकेय, 'ब्राह्मणदेव' और 'द्रम' लेख युक्त सिक्के
(४) कुषाण सिक्कों की अनुकृति वाले सिक्के

(१) नन्दी तथा हाथी प्रकार के सिक्के—ये सिक्के तांबे द्वारा निर्मित हैं और इनकी तिथि २०० ई०पू० निर्धारित की जाती है। इन सिक्कों के अग्रभाग पर

नन्दी के सम्मुख स्तम्भ की आकृति बनी है और वहीं 'यौधेयानां बहुधान्यकानाम्' और कभी-कभी 'यौधेयानां भूमि' ब्राह्मी लिपि में अंकित किया गया है। पृष्ठ भाग पर हाथी अथवा नन्दी पद का अंकन दिखायी देता है। 'बहुधान्यकानाम्' का अर्थ है कि ये (यौधेय) बहुधान्यक क्षेत्र के निवासी हैं। महाभारत के अनुसार बहुधान्यक क्षेत्र रोहतक के आसपास का क्षेत्र है, जहाँ 'महामयूरक' निवास करते हैं। बहुधान्यक से तात्पर्य उस क्षेत्र से भी है जहाँ बहुत अधिक अनाज उत्पन्न होता है। जो पशुओं और कृषि द्वारा समृद्ध हो, ऐसा प्रदेश रोहतक ही माना जाता है, जहाँ के निवासी कार्तिकेय की उपासना करते थे, जिनका वाहन मयूर है। यौधेयों के सिक्कों पर भी अधिकांशतया कार्तिकेय का अंकन दिखायी देता है। अत: बहुधान्यक क्षेत्र के 'मत मयूरकों' को यौधेय माना जा सकता है।

(२) कार्तिकेय अंकित एवं 'ब्राह्मण्यदेव' लेख युक्त सिक्के—ये सिक्के चाँदी तथा ताँबा—दोनों धातुओं से बने हैं और इनकी तिथि प्रथम शताब्दी ई०पू० मानी जाती है। चाँदी के सिक्कों के अग्रभाग पर कमलपुष्प पर षड्मुखी कार्तिकेय का अंकन किया गया है जिसके दाँए हाथ में शूल है, जबकि बायाँ हाथ नितम्ब के ऊपर है। इसी तरफ ब्राह्मी लिपि में 'यौधेयानां भागवत स्वामिनो ब्राह्मणस्य' अर्थात 'यौधेयों के स्वामी ब्राह्मणदेव' लेख अंकित है। इन सिक्कों के पृष्ठभाग पर पर्वत, नन्दिपद, वेदिका में वृक्ष बना हुआ है। कभी-कभी इन सिक्कों पर एकमुखी कार्तिकेय का चित्र भी दिखायी देता है। जिसके हाथ में शूल अथवा मोर है। इसी प्रकार के ताँबे के सिक्कों पर 'भागवत स्वामिनो ब्राह्मणस्य देवस्य कुमारस्य', 'ब्राह्मणदेवस्य भागवत' अथवा 'स्वामी भगवत:' आदि अंकित है। इससे यह स्पष्ट है कि युद्ध प्रिय यौधेयों ने युद्ध के देवता कार्तिकेय को ही अपना कुलदेवता स्वीकार किया था और इस लिए अधिकांश सिक्कों पर उन्हीं का अंकन दिखायी देता है।

इन सिक्कों के पृष्ठभाग पर नन्दिपद, सुमेरुपर्वत, बोधिवृक्ष, कौमारीदेवी अथवा षष्ठीदेवी (कार्तिकेय की पत्नी) का अंकन प्राप्त होता है। ताम्र के ही कुछ अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर शूलधारी षड्मुखी कार्तिकेय अंकित हैं, जिनका बायाँ हाथ नितम्ब पर है। इसी भाग में किसी लेख के अस्पष्ट चिह्न दिखायी देते हैं। जबकि पृष्ठभाग में खड़ी मुद्रा में दाहिना हाथ उठाए हुए त्रिमुखी शिव अंकित हैं। उनका बायाँ हाथ नितम्ब पर टिका है। वेदिका में वृक्ष या पर्वत का अंकन भी दृष्टिगोचर होता है।

(३) कार्तिकेय, 'ब्राह्मण्यदेव' और 'द्रम' लेखयुक्त सिक्के—इन सिक्कों पर भी द्वितीय प्रकार के सिक्कों के समान ही अंकन किया गया था। इन सिक्कों पर कार्तिकेय के साथ ही 'ब्राह्मणदेवस्य' वाला कोई एक लेख और साथ में 'द्रम' लिखा है।

(४) कुषाण सिक्कों की अनुकृति वाले सिक्के—ये सिक्के आकृति में सुडौल और बड़े हैं और इन पर कुषाण सिक्कों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

ताँबे से बने इन सिक्कों के अग्रभाग पर शूलधारी राजा, षड्मुखी कार्तिकेय तथा मोर अंकित है। साथ ही 'यौधेयानांगणस्य जयः' अथवा 'यौधेयगणस्य जयः' लेख अंकित है। इसी तरफ 'द्वि' अथवा 'त्रि' भी लिखा हुआ है, जिसके विषय में विद्वानों का विचार है कि इसका तात्पर्य यौधेयों के साथ दो अथवा तीन गणराज्यों के सम्मिलित संघ से है जिन्होंने कुषाणों को परास्त किया था। कुछ विद्वान इसे यौधेय गणराज्य के विभाजन की ओर संकेत मानते हैं, जबकि अन्य विद्वानों का विचार है कि यह तीन क्षेत्रों की ओर निर्दिष्ट करता है जहाँ यौधेयों ने शासन किया था। ये तीन क्षेत्र महाभारत में रोहतक, मरुभूमि और सिरिसिक नाम से उल्लेखित हैं। इनकी तुलना क्रमशः रोहतक, बीकानेर और बहावलपुर से की जाती है। इन सिक्कों के पृष्ठभाग पर देवता की आकृति बनी है। इसी प्रकार की आकृति कुषाण शासकों के मिहिर (सूर्य) प्रकार के सिक्कों पर दिखाई देती है। इन सिक्कों पर अंकित लेख यौधेयों द्वारा कुषाणों की पराजय का ज्ञान कराते हैं। जिसके पश्चात अपनी विजय को इंगित करते लेख के साथ इन सिक्कों का प्रचलन किया गया। इस अनुमान की पुष्टि इन सिक्कों पर प्रयुक्त ठप्पों से भी होती है, जिनमें पूर्वप्रचलित ठप्पों के साथ ही नए ठप्पों का भी प्रयोग किया गया है।

डॉ० किरणकुमार थपल्याल यौधेय सिक्कों का प्रकार विभाजन भिन्न प्रकार से करते हैं। उपरोक्त प्रकारों के अतिरिक्त वे पृष्ठभाग में 'महरजस्य' अंकित सिक्कों को भी यौधेयों का सिक्का मानते हैं, जिनकी धातु, प्रकार और प्राप्ति स्थान यौधेय सिक्कों के समान है। इन सिक्कों के अग्रभाग में वेदिका में वृक्ष और/या उज्जैन चिह्न अंकित है। यद्यपि अधिकांश विद्वान, जिनमें के०डी० वाजपेयी प्रमुख हैं, इन सिक्कों को कौशाम्बी के सिक्के स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार अग्रभाग में पर्वत, स्वस्तिक और ब्राह्मी लेख 'भानुज'/'भानुवस्य'/'भानुवस'/'राज्ञोभानुवस' वाले सिक्के, जिनके पृष्ठ भाग पर शूल या त्रिशूल, कोई देवता अथवा षड्मुखी कार्तिकेय चिह्नित है, को भी थपल्याल महोदय यौधेय शासकों के सिक्के मानते हैं और उनके विचार से 'भानु' किसी राजा का नाम रहा होगा।

इस प्रकार यौधेय सिक्कों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ताँबे और थोड़ा-बहुत चाँदी के सिक्कों को प्रचलन में लाने वाले यौधेय गणराज्य के शासक कार्तिकेय के उपासक युद्धप्रिय लोग थे, जिन्होंने कुषाणों को भी परास्त करने का साहस दिखाया था। इनका शासनकाल पाँचवी शताब्दी ई०पू० से द्वितीय-तृतीय शताब्दी ई०पू० के मध्य माना जा सकता है, जब इन्होंने पंजाब और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में शासन किया।

✣